

II-220

ममरुतं ममरुतं ममरुतं ममरुतं ममरुतं

नमोऽग्रीवकासलउदयकलधसणीलनिक्रस्यनसमसुदव
लाकेमनूष्यलाकेयानवकटिउत्पत्तिक्रुअगुखठनाअणी
मोलागधसंककाकूयूअऊनकाइदेनिकनकयलयमकि
अपकेइउल्लिअदिनमदेनयाकर्मसाव्यसथअनयानव
मीनकिनयगाउंतिष्ठाकगुअननमसायानादिकियायाः

श्री

रुनं कारु मूर्तिरुगा अशानसां वृद्ध मार्गि सज्ज ह्यय का नया भं
धर्मि धल लतां विद्या क मरु नं सम सता नू दान सं पूर्ण्या डं वि क
क मरु हो मे क कुन का रू ना अशाना ॥ १ ॥ एत म्म ना य स म्
इह गव न क म म ग नः क नो के लि पू टा द ता ह्य य मा रू स्थिः
गण न ॥ ॥ रुनं सं वृद्ध धाय श्री ग म्म क मू नि ग म ग न याः

॥ एत म्म ना अ ला रु नि गां रु रु ल गा अ न मः ए का न गा ना अ त
ऊ या स्थि य मू ख न स म स स रु ला का म न पार्थ ना या गं ॥ ६
॥ म डि ना य म मा र्ग म ग्ज नू कं पा य म वि द्याः मा या कू ला हि सं वा
धिय म्म ला हि रु ता मा रू ॥ ॥ एत ग ता न क्रि त नि रु दि
न गा य गा नि मि कि न रु नं क्रि य नि रु ड य का न गा य नि मि कि नः

कृष्णकृष्णमायाकालयामनुयाखनियनिरुद्धदयकाउ
 यसन्नरूपमात्रा ॐ ॥ अरुद्धनयकमनाहमर्द्धगवाकुरुनयन
 श्री सादिनायसर्वसत्त्वानामनूरुद्धलोकेश ॥ ॥ रुद्रगवन्मूर्द्धा ॐ
 रुद्रनायचोभसूक्तद्वंद्वानसमस्तलोकगनिर्द्धाष्टद्वेगेः खन
 याकुरुहमाष्टकलयाद्वंद्वानमूर्द्धासमस्तलोकगनिर्द्धाः

दिव्यायनिमिर्द्धिनमूर्द्धनरुद्धनसद्वाननययारुद्धलया
 मिनिर्द्धिनयसन्नरूपमात्राययत्रकवद्वयाष्टिनगीभावाः
 मूर्द्धिरुद्रगवानयार्थनायानं ॥ ६ ॥ एकाभयानुसंवृद्धारु
 गवन्मूर्द्धाकुरुगुरुः समस्तलोकैर्द्ध्याभयतित्तनः ॥
 रुद्रगवन्मूर्द्धागिरुमायाकालयामनुयाखनियनिरुद्धदयकाउ

श्री गगिनस्तु लयालसामस्तु नवनस्तु लयालकयनिसुत
मिथुनस्तु लयालसामस्तु लयालकयनिसुत नवनस्तु लयालकयनिसुत
गगिनस्तु लयालसामस्तु लयालकयनिसुत नवनस्तु लयालकयनिसुत
गगिनस्तु लयालसामस्तु लयालकयनिसुत नवनस्तु लयालकयनिसुत
गगिनस्तु लयालसामस्तु लयालकयनिसुत नवनस्तु लयालकयनिसुत
गगिनस्तु लयालसामस्तु लयालकयनिसुत नवनस्तु लयालकयनिसुत
गगिनस्तु लयालसामस्तु लयालकयनिसुत नवनस्तु लयालकयनिसुत
गगिनस्तु लयालसामस्तु लयालकयनिसुत नवनस्तु लयालकयनिसुत
गगिनस्तु लयालसामस्तु लयालकयनिसुत नवनस्तु लयालकयनिसुत
गगिनस्तु लयालसामस्तु लयालकयनिसुत नवनस्तु लयालकयनिसुत